



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	3-8-23	2	2-7

प्रोत्साहन • यूएसए के कृषि विभाग में पोस्ट डॉक्टरल वैज्ञानिक के रूप में चयन, 70 लाख रुपये की मिलेगी फेलोशिप एचएयू रिसर्च स्कॉलर डॉ. मंजीत ने स्वलेरोटिनिया तना सड़न रोग के लिए प्रतिरोधी जीनोटाइप चिह्नित किया

भास्कर न्यूज़ | हिंसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के रिसर्च स्कॉलर डॉ. मंजीत ने दुनिया भर में ब्रैसिका तिलहन के लिए बड़ा खतरा कहे जाने वाली स्वलेरोटिनिया तना सड़न नामक बीमारी के निवारण के लिए अत्यधिक प्रतिरोधी जीनोटाइप चिह्नित किया है। ब्रैसिका तिलहन की फसल से संबंधित जंगली किस्मों से यह खोज निकाली है। जिससे स्वलेरोटिनिया तना सड़न बीमारी से लड़ने के लिए अन्य प्रतिरोधी किस्मों को विकसित कर इससे निजात पा सकेंगे। डॉ. मंजीत की इस उपलब्धि के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका ने कृषि विभाग में कृषि अनुसंधान सेवाओं के साथ पोस्ट डॉक्टरल वैज्ञानिक के रूप में चयन किया है। उनको 70 लाख रुपये सालाना की फेलोशिप प्रदान की जाएगी।

डॉ. मंजीत ने बताया कि पूरा बचाव जैसी उन्नत तकनीकों का उपयोग करते हुए सफलतापूर्वक कई इंटरजेनेरिक क्रॉस विकसित किए गए, जिसके परिणामस्वरूप संतानों ने स्वलेरोटिनिया स्टेम रोट के खिलाफ प्रतिरोध प्रदर्शित किया। जिसके बाद ब्रैसिकेसी में अत्यधिक प्रतिरोधी जीनोटाइप की पहचान हो पाई। इससे स्वलेरोटिनिया तना सड़न बीमारी के खिलाफ कई नए प्रतिरोध तंत्रों का पता चला। डॉ. मंजीत ने पीएचडी के उपरांत यह कार्य आईसीएआर की परियोजना के तहत जारी रखा। डॉ. मंजीत ने इस उपलब्धि का श्रेय विश्वविद्यालय के सरसों प्रजनन के विशेषज्ञ वैज्ञानिक डॉ. रामअवतार को दिया है। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा व मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य ने उनको बधाई दी है।



एचएयू के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज डॉ. मंजीत को बधाई देते हुए।

अमेरिका के कृषि विभाग में कृषि अनुसंधान सेवाओं के साथ पोस्ट डॉक्टरल वैज्ञानिक के रूप में रिसर्च स्कॉलर डॉ. मंजीत का चयन हुआ है। यह हकूफ में अपनाए जा रहे उच्च शैक्षणिक व अनुसंधान मानकों का प्रतीक है। कृषि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास व अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शन पर पूरा ध्यान दे रहा है।
-प्रो. बीआर काम्बोज, कुलपति, हकूफ

नुकसानदेय तना आरा मक्खी कीट की प्रतिरोधी किस्म पर करेंगे शोध

रिसर्च स्कॉलर डॉ. मंजीत अमेरिका में शीतकालीन गेहूँ की अत्यधिक नुकसानदेय तना आरा मक्खी कीट की प्रतिरोधी किस्म को विकसित करने पर शोध शुरू करेंगे। इसके लिए वे इस कीट की प्रतिरोधी प्रजनन व अनुवांशिकी का अध्ययन करेंगे। उन्होंने बताया कि खास्कर यह कीट उत्तरी अमेरिकी मैदानों के गेहूँ के लिए गंभीर खतरा बनता जा रहा है।

स्वलेरोटिनिया तना सड़न बीमारी से उपज में 90 प्रतिशत तक नुकसान होने की जताई संभावना

स्वलेरोटिनिया तना सड़न बीमारी ब्रैसिका तिलहन के लिए बड़ा खतरा माना गया है, जिससे दुनिया भर में काफी आर्थिक नुकसान हो रहा है। भारत में वैज्ञानिकों ने इस बीमारी के कारण उपज में अधिकतम 90 प्रतिशत हानि होने की संभावना जताई है। अभी तक इस विशेष बीमारी से लड़ने के लिए प्रभावशाली प्रतिरोधी किस्मों की कमी है, जोकि आगे चलकर स्वलेरोटिनिया तना सड़न बीमारी ब्रैसिका तिलहन के लिए विनाशकारी बीमारी साबित हो सकती है। प्रतिरोधी किस्म जीनोटाइप व स्टेम-फिटिक्ल-स्ट्रेच-मीडियेटेड-रिजिस्टेंस से काबू पा सकते हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि न्यूज	3-8-23	9	3-8

ब्रैसिका तिलहन के लिए घातक स्क्लेरोटिनिया तना सड़न रोग के निवारण के लिए अत्याधिक प्रतिरोधी जीनोटाइप चिन्हित किया

एचएयू के रिसर्च स्कॉलर डॉ. मंजीत 70 लाख सालाना की फैलोशिप के साथ अमेरिका में करेंगे शोध

हरि न्यूज 11 हिंसा

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के रिसर्च स्कॉलर डॉ. मंजीत ने दुनिया भर में ब्रैसिका तिलहन के लिए बड़ा खतरा कहे जाने वाली स्क्लेरोटिनिया तना सड़न नामक बीमारी के निवारण के लिए अत्याधिक प्रतिरोधी जीनोटाइप चिन्हित किया है। यह खोज डॉ. मंजीत ने ब्रैसिका तिलहन की फसल से संबंधित जंगली किस्मों से निकाली है, जिससे स्क्लेरोटिनिया तना सड़न बीमारी से लड़ने के लिए अन्य प्रतिरोधी किस्मों को विकसित कर इससे निजात पा सकेंगे।

डॉ. मंजीत की इस बेहतरीन उपलब्धि के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका ने कृषि विभाग में कृषि अनुसंधान सेवाओं के साथ पोस्ट-डॉक्टोरल वैज्ञानिक के रूप में चयन किया है, जिन्हें 70 लाख रुपये सालाना की फैलोशिप प्रदान की जाएगी। इस उपलब्धि पर



हिसार। एचएयू के कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज रिसर्च स्कॉलर डॉ. मंजीत को बधाई देते हुए।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज ने डॉ. मंजीत सहित विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की टीम को बधाई देकर भविष्य में भी इसी प्रकार नए कीर्तिमान स्थापित करने की कामना की। कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज ने

कहा कि अमेरिका के कृषि विभाग में कृषि अनुसंधान सेवाओं के साथ पोस्ट-डॉक्टरल वैज्ञानिक के रूप में रिसर्च स्कॉलर डॉ. मंजीत का चयन हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में अपनाए जा रहे उच्च शैक्षणिक व अनुसंधान

मानकों का प्रतीक है। डॉ. मंजीत ने इस उपलब्धि का श्रेय विश्वविद्यालय के सरसों प्रजनन के विशेषज्ञ वैज्ञानिक डॉ. राम अवतार को दिया है।

भूख बचाव जैसी उन्नत तकनीकों का उपयोग करते हुए सफलतापूर्वक कई इंटरजेनेरिक क्रॉस विकसित किए गए, जिसके परिणामस्वरूप संतानों ने स्क्लेरोटिनिया स्टेम रोट के खिलाफ प्रतिरोध प्रदर्शित किया, जिसके बाद ब्रैसिकेसी में अत्याधिक प्रतिरोधी जीनोटाइप की पहचान हो पाई। इससे स्क्लेरोटिनिया तना सड़न बीमारी के खिलाफ कई नए प्रतिरोधी लंसे का पता चला। डॉ. मंजीत ने पीएचडी के उपरांत यह कार्य भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् की परियोजना के तहत जारी रखा। उन्होंने इस शोध का श्रेय हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में शिक्षा की उपलब्ध सुविधाओं और शिक्षकों की ओर से मिले मार्गदर्शन को दिया है।

उपज में अधिकतम 90 प्रतिशत हानि होने की संभावना

स्क्लेरोटिनिया तना सड़न बीमारी ब्रैसिका तिलहन के लिए बड़ा खतरा माना गया है, जिससे कृषि भर में काफी आर्थिक नुकसान हो रहा है। भारत में वैज्ञानिकों ने इस बीमारी के कारण उपज में अधिकतम 90 प्रतिशत हानि होने की संभावना जताई है। अभी तक इस विशेष बीमारी से लड़ने के लिए प्रभावशाली प्रतिरोधी किस्मों की कमी है, जोकि आगे चलकर स्क्लेरोटिनिया तना सड़न बीमारी ब्रैसिका तिलहन के लिए विनाशकारी बीमारी साबित हो सकती है। प्रतिरोधी किस्म जीनोटाइप व स्टेम-किजकल-स्ट्रेच-नोडियेटेड-रैजिस्ट्रेस की मदद से इस बीमारी से छुटकारा पाया जा सकता है। रिसर्च स्कॉलर डॉ. मंजीत ने बताया कि अब वह अमेरिका में शीतकालीन गेहूँ की अत्याधिक नुकसानदेय तना आरा नकली कीट की प्रतिरोधी किस्म को विकसित करने पर शोध शुरू करेंगे। इसके लिए वे इस कीट की प्रतिरोधी प्रजनन व अणुशास्त्रों का अध्ययन करेंगे। उन्होंने बताया कि आसकर यह कीट उत्तरी अमेरिकी मैदानों के गेहूँ के लिए गंभीर खतरा बनता जा रहा है। इस अध्ययन पर कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एनके पाहुजा व सीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य ने भी हार्दिक बधाकर उनके उत्कृष्ट शोध को बधाई दी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

दिनांक

पृष्ठ संख्या

कॉलम

पंजाब केसरी

3-8-23

4

3-6

एच.ए.यू. का रिसर्च स्कॉलर डॉ. मंजीत अमरीका में करेगा शोध

हिसार, 2 अगस्त (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के रिसर्च स्कॉलर डॉ. मंजीत ने दुनियाभर में ब्रैसिका तिलहन के लिए बड़ा खतरा कहे जाने वाली स्क्लेरोटिनिया तना सड़न नामक बीमारी के निवारण के लिए अत्याधिक प्रतिरोधी जीनोटाइप चिन्हित किया है। यह खोज डॉ. मंजीत ने ब्रैसिका तिलहन की फसल से संबंधित जंगली किस्मों से निकाली है, जिससे स्क्लेरोटिनिया तना सड़न बीमारी से लड़ने के लिए अन्य प्रतिरोधी किस्मों को विकसित कर इससे निजात पा सकेंगे।

डॉ. मंजीत की इस बेहतरीन उपलब्धि के लिए संयुक्त राज्य अमरीका ने कृषि विभाग में कृषि अनुसंधान सेवाओं के साथ पोस्ट-डॉक्टरल वैज्ञानिक के रूप में चयन किया है, जिन्हें 70 लाख रुपये सालाना की फेलोशिप प्रदान की जाएगी। इस उपलब्धि पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि अमरीका के कृषि विभाग में कृषि अनुसंधान सेवाओं के साथ पोस्ट-डॉक्टरल वैज्ञानिक के रूप में रिसर्च स्कॉलर डॉ. मंजीत का चयन चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में अपनाए जा रहे उच्च शैक्षणिक व अनुसंधान मानकों का प्रतीक है। डॉ. मंजीत ने इस उपलब्धि का श्रेय विश्वविद्यालय के सरसों प्रजनन के विशेषज्ञ



रिसर्च स्कॉलर डॉ. मंजीत को बधाई देते कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज।

वैज्ञानिक डॉ. राम अवतार को दिया है।

उन्होंने बताया कि भूण बचाव जैसी उन्नत तकनीकों का उपयोग करते हुए सफलतापूर्वक कई इंटरजैनेरिक क्रॉस विकसित किए गए, जिसके परिणामस्वरूप संतानों ने स्क्लेरोटिनिया स्टेम रोट के खिलाफ प्रतिरोध प्रदर्शित किया, जिसके बाद ब्रैसिकेसी में अत्याधिक प्रतिरोधी जीनोटाइप की पहचान हो पाई। इससे स्क्लेरोटिनिया तना सड़न बीमारी के खिलाफ कई नए प्रतिरोध तंत्रों का पता चला।

रिसर्च स्कॉलर डॉ. मंजीत ने बताया कि अब वह अमरीका में शीतकालीन गेहूं की अत्याधिक नुक्सानदेय तना आरा मक्खी कीट की प्रतिरोधी किस्म को विकसित करने पर शोध शुरू करेंगे। इसके लिए वे इस कीट की प्रतिरोधी प्रजनन व अनुवांशिकी का अध्ययन करेंगे।

उन्होंने बताया कि खासकर यह कीट उत्तरी अमरीकी मैदानों के गेहूं के लिए गंभीर खतरा बनता जा रहा है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

अमर उजाला

दिनांक

3-8-22

पृष्ठ संख्या

4

कॉलम

3-4



रिसर्च स्कॉलर डॉ. मंजीत को बधाई देते एचएयू के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज व अन्य। स्रोत: विधि

एचएयू के रिसर्च स्कॉलर डॉ. मंजीत 70 लाख रुपये सालाना फैलोशिप के साथ अमेरिका में करेंगे शोध

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के रिसर्च स्कॉलर डॉ. मंजीत ने ब्रेसिका तिलहन के लिए बड़ा खतरा कहे जाने वाली स्क्लेरोटिनिया तना सड़न नामक बीमारी के निवारण के लिए अत्यधिक प्रतिरोधी जीनोटाइप चिह्नित किया है। यह खोज डॉ. मंजीत ने ब्रेसिका तिलहन की फसल से संबंधित जंगली किस्मों से निकाली है, जिससे स्क्लेरोटिनिया तना सड़न बीमारी से लड़ने के लिए अन्य प्रतिरोधी किस्मों को विकसित कर इससे निजात पा सकेंगे।

डॉ. मंजीत की इस बेहतरीन उपलब्धि के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका ने कृषि विभाग में कृषि अनुसंधान सेवाओं के साथ पोस्ट-डॉक्टरल वैज्ञानिक के रूप में चयन किया है, जिन्हें 70 लाख रुपये सालाना की फैलोशिप प्रदान की जाएगी। इस

आरा मक्खी कीट पर करेंगे अध्ययन

रिसर्च स्कॉलर डॉ. मंजीत ने बताया कि अब वह अमेरिका में शीतकालीन रोहू की अत्यधिक नुकसानदेय तना आरा मक्खी कीट की प्रतिरोधी किस्म को विकसित करने पर शोध शुरू करेंगे। इसके लिए वे इस कीट की प्रतिरोधी प्रजनन व अनुवांशिकी का अध्ययन करेंगे। इस अवसर पर कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा व मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य आदि उपस्थित रहे।

उपलब्धि पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने डॉ. मंजीत सहित विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की टीम को बधाई दी। डॉ. मंजीत ने इस उपलब्धि का श्रेय विधि के सरसों प्रजनन के विशेषज्ञ वैज्ञानिक डॉ. राम अवतार को दिया है। संवाद



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
उज्ज्वल समाचार	3-8-22	8	1-2



एचएयू के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज रिसर्च स्कॉलर डॉ. मंजीत को बधाई देते हुए।

एचएयू का रिसर्च स्कॉलर डॉ. मंजीत 70 लाख सालाना की फेलोशिप के साथ अमेरिका में करेगा शोध

हिसार, 2 अगस्त (खिरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के रिसर्च स्कॉलर डॉ. मंजीत ने दुनिया भर में ब्रैसिका तिलहन के लिए बड़ा खतरा कहे जाने वाली स्वलेरोटिनिया तना सड़न नामक बीमारी के निवारण के लिए अत्याधिक प्रतिरोधी जीनोटाइप चिन्हित किया है। यह खोज डॉ. मंजीत ने ब्रैसिका तिलहन की फसल से संबंधित जंगली किस्मों से निकाली है, जिससे स्वलेरोटिनिया तना सड़न बीमारी से लड़ने के लिए अन्य प्रतिरोधी किस्मों को विकसित कर इससे निजात पा सकेंगे। डॉ. मंजीत को इस बेहतरीन उपलब्धि के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका ने कृषि विभाग में कृषि अनुसंधान सेवाओं के साथ पोस्ट-डॉक्टरेल वैज्ञानिक के रूप में चयन किया है, जिन्हें 70 लाख रुपये सालाना की फेलोशिप प्रदान की जाएगी। इस उपलब्धि पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने डॉ. मंजीत सहित विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की टीम को बधाई देकर भविष्य में भी इसी प्रकार नए कीर्तिमान स्थापित करने की कामना की। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि अमेरिका के कृषि विभाग में कृषि अनुसंधान सेवाओं के साथ पोस्ट-डॉक्टरेल वैज्ञानिक के रूप में रिसर्च स्कॉलर डॉ. मंजीत का चयन चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में अपनाए जा रहे उच्च शैक्षणिक व अनुसंधान मानकों का प्रतीक है। विश्वविद्यालय अपने विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास व अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शन पर पूरा ध्यान दे रहा है। डॉ. मंजीत ने इस उपलब्धि का श्रेय विश्वविद्यालय के सरसौ प्रजन्म के विशेषज्ञ वैज्ञानिक डॉ. राम अवतार को दिया है। इस अवसर पर कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा व मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य ने भी हार्सला बढ़ाकर उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी प्लस न्यूज	02.08.2023	--	--

एचएयू के रिसर्च स्कॉलर डॉ. मंजीत अमेरिका में करेंगे शोध

सिटी प्लस न्यूज, हिंसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के रिसर्च स्कॉलर डॉ. मंजीत, जिन्होंने स्क्लेरोटिनिया तना सडन नामक बीमारी के निवारण के लिए अत्याधिक प्रतिरोधी जीनोटाइप चिन्हित किया है, उनको संयुक्त राज्य अमेरिका ने कृषि विभाग में कृषि अनुसंधान सेवाओं के साथ पोस्ट-डॉक्टरेल वैज्ञानिक के रूप में चयन किया है, जिन्हें 70 लाख रुपये सालाना की फेलोशिप प्रदान की जाएगी। डॉ. मंजीत ने इस उपलब्धि का श्रेय विश्वविद्यालय के सरसों प्रजनन के विशेषज्ञ वैज्ञानिक डॉ. राम अवतार को दिया है।



उन्होंने बताया कि धूप बचाव जैसी उन्नत तकनीकों का उपयोग करते हुए कई इंटरजेनेरिक क्रॉस विकसित किए गए, जिसके परिणामस्वरूप संतानों ने

स्क्लेरोटिनिया स्टेम रोट के खिलाफ प्रतिरोध प्रदर्शित किया, जिसके बाद ब्रैसिकेसी में अत्याधिक प्रतिरोधी जीनोटाइप की पहचान हो पाई। इससे स्क्लेरोटिनिया तना सडन बीमारी के

खिलाफ कई नए प्रतिरोध तंत्रों का फा चला।

रिसर्च स्कॉलर डॉ. मंजीत ने बताया कि अब वह अमेरिका में शीतकालीन गेहूं की अत्याधिक नुकसानदेय तना आर मक्खी कीट की प्रतिरोधी किस्म को विकसित करने पर शोध शुरू करेंगे। इसके लिए वे इस कीट की प्रतिरोधी प्रजनन व अनुवांशिकी का अध्ययन करेंगे। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने डॉ. मंजीत सहित विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की टीम को बधाई देकर भविष्य में भी इसी प्रकार नए कीर्तिमान स्थापित करने की कामना की।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हिन्दुस्थान समाचार	02.08.2023	--	--



हिसार : एचएयू का रिसर्च स्कॉलर डॉ. मंजीत 70 लाख सालाना की फेलोशिप के साथ अमेरिका में करेगा शोध

14th 1 shares

ब्रिटीश विराटन के लिए प्रमुख स्कॉलरशिप तथा सड़न रोग के निवारण के लिए अत्याधिक प्रतिरोधी बीजोत्पादन चिह्नित किया

हिसार, 2 अगस्त (वि.स.)। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के रिसर्च स्कॉलर डॉ. मंजीत ने युनिवर्सिटी ऑफ ब्रिटीश विराटन के लिए बड़ा सल्लाह कर्तु जलने काठी स्कॉलरशिप तथा सड़न न्यमक बीमारों के निवारण के लिए अत्याधिक प्रतिरोधी बीजोत्पादन चिह्नित किया है।

एच डॉ. मंजीत ने ब्रिटीश विराटन की कसल से संबंधित जगती किस्मों से निकाली है, जिससे स्कॉलरशिप तथा सड़न बीमारों से लड़ने के लिए अन्य प्रतिरोधी किस्मों को विकसित कर दूसरी निरुद्धत या सकेगी।

डॉ. मंजीत की इस बेंडरटोन उपलब्धि के लिए समुक्त राज्य अमेरिका में कृषि विभाग में कृषि अनुसंधान रोज़गारों के साथ पोस्ट-डॉक्टोरल वैज्ञानिक के रूप में बचन किया है, जिन्हें 70 लाख रुपये सालाना की फेलोशिप प्रदान की जाएगी। इस उपलब्धि पर विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. बी.एन. जम्मोहन ने डॉ. मंजीत को विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की टीम को बधाई देकर धन्यवाद में भी इसी प्रकार नए जतिमान सथापित करने की कामना की। कुलपति डॉ. बी.एन. जम्मोहन ने बुधवार को कहा कि अमेरिका के कृषि विभाग में कृषि अनुसंधान रोज़गारों के साथ पोस्ट-डॉक्टोरल वैज्ञानिक के रूप में रिसर्च स्कॉलर डॉ. मंजीत का बचन हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में अगला जा रहे उच्च शैक्षणिक व अनुसंधान मानकों का प्रतीक है। विश्वविद्यालय अपने विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास व अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शन पर पूरा ध्यान दे रहा है। उन्होंने कहा कि इस ही के वर्षों में विश्वविद्यालय के अनेक विद्यार्थी विश्व के अनेक प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में उच्च शैक्षणिक डिग्री हासिल करने के लिए गए हैं। उन्होंने कहा कि एचएयू विश्व स्तर के विश्वविद्यालयों में सुनार है क्योंकि इस के विद्यार्थी न केवल विदेशों में पढ़ाई के लिए जाते हैं बल्कि विदेशी उद्योग भी पढ़ाई के लिए यहां आते हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	02.08.2023	--	--

एचएयू का रिसर्च स्कॉलर डॉ. मंजीत 70 लाख सालाना की फैलोशिप के साथ अमेरिका में करेगा शोध ब्रैसिका तिलहन के लिए घातक स्वलेरोटिनिया तना सड़न रोग के निवारण के लिए अत्याधिक प्रतिरोधी जीनोटाइप चिन्हित किया

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार, 2 अगस्त। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के रिसर्च स्कॉलर डॉ. मंजीत ने दुनिया भर में ब्रैसिका तिलहन के लिए बड़ा खतरा बढ़ी जाने वाली स्वलेरोटिनिया तना सड़न रोग के निवारण के लिए अत्याधिक प्रतिरोधी जीनोटाइप चिन्हित किया है। यह खोज डॉ. मंजीत ने ब्रैसिका तिलहन को प्रभाव से संबंधित जेनोटाइप सिद्ध किया है, जिससे स्वलेरोटिनिया तना सड़न बीमारी से लड़ने के लिए अन्य प्रतिरोधी किस्मों को विकसित कर इससे निवृत्त हो सकेंगे। डॉ. मंजीत को इस बेहतरीन उपलब्धि के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका के कृषि विभाग में कृषि अनुसंधान सेवाओं के साथ पोस्ट-डॉक्टोरल वैज्ञानिक के रूप में भर्तव किया है, जिन्हें 70 लाख रुपये सालाना की फैलोशिप प्रदान की जाएगी। इस उपलब्धि पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. जे.आर. काज्जोर ने डॉ. मंजीत की प्रतिरोधी किस्मों को जेनोटाइप को जेन को बर्दाश्त देकर परिष्कार में भी इसी प्रकार एक कीर्तमान साधित करने की कामना की। कुलपति प्रो. जे.आर. काज्जोर ने कहा कि अमेरिका के कृषि विभाग में कृषि अनुसंधान सेवाओं के साथ पोस्ट-डॉक्टोरल वैज्ञानिक के रूप में रिसर्च स्कॉलर डॉ. मंजीत का चरण चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में अपनाए जा रहे उच्च शैक्षणिक व अनुसंधान मानकों का प्रतीक है। विश्वविद्यालय

अपने विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास व अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शन पर पूरा ध्यान दे रहा है। उन्होंने कहा कि इस तरह से के वर्षों में विश्वविद्यालय के अनेक विद्यार्थी विश्व के अनेक प्रमुख विश्वविद्यालयों में उच्च शैक्षणिक विधि हासिल करने के लिए गए हैं। उन्होंने कहा कि एचएयू विश्व स्तर के विश्वविद्यालयों में सुपार है क्योंकि यहां के विद्यार्थी व केवल विदेशों में पढ़ने के लिए जाते हैं बल्कि विदेशों का भी पढ़ने के लिए यहां आते हैं। डॉ. मंजीत ने इस उपलब्धि का जेन विश्वविद्यालय के सर्वोत्तम प्रयत्न के विशेषज्ञ वैज्ञानिक डॉ. एच. अजयलाल को दिया है। उन्होंने बताया कि जेन प्रयोगशाला जैसी उच्च तकनीकों का उपयोग करते हुए सफलतापूर्वक कई इंटरकेस्टिंग जेन विकसित किए गए, जिसके परिणामस्वरूप संतानों ने स्वलेरोटिनिया रोग सेट के खिलाफ प्रतिरोध प्रदर्शित किया, जिसके बाद वैज्ञानिकों में अत्याधिक प्रतिरोधी जीनोटाइप की खोज हो पाई। इससे स्वलेरोटिनिया तना सड़न बीमारी के खिलाफ कई नए प्रतिरोधी जीनों का पता चला। डॉ. मंजीत ने पोस्ट-डॉक्टोरल मान्यता प्राप्त कृषि अनुसंधान संस्थान को परिचय देते हुए कहा कि जेन विश्वविद्यालय में जेन को उपलब्ध कृषि विभागों और विभागों को जोड़ने में मिले मार्गदर्शकों को धन्य है। स्वलेरोटिनिया तना सड़न बीमारी से उपज में अधिकतम 90 प्रतिशत हानि होने की संभावना



स्वलेरोटिनिया तना सड़न बीमारी ब्रैसिका तिलहन के लिए बड़ा खतरा माना गया है, जिससे दुनिया भर में काफी आर्थिक नुकसान हो रहा है। भारत में वैज्ञानिकों ने इस बीमारी के कारण उपज में अधिकतम 90 प्रतिशत हानि होने की संभावना जताई है। अभी तक इस विषय बीमारी से लड़ने के लिए प्रभावशाली प्रतिरोधी किस्मों को नहीं है, जोकि जेन प्रयोगशाला स्वलेरोटिनिया तना सड़न बीमारी ब्रैसिका तिलहन के लिए विनाशकारी बीमारी माना हो सकती है। प्रतिरोधी किस्म जीनोटाइप व जेन-पिडिकेशन-जेन-वैरिफिकेशन-वैरिफिकेशन को चरद से इस बीमारी से मुक्तता पाया जा सकता है।

अब मैट्रू के लिए सुकसानदेय तना आरा सब्सिडी की प्रतिरोधी किस्म को विकसित करने पर काम शुरू किया। रिसर्च स्कॉलर डॉ. मंजीत ने बताया कि अब यह अमेरिका में लोकसालीन मैट्रू की अत्याधिक सुकसानदेय तना आरा सब्सिडी की प्रतिरोधी किस्म को विकसित करने पर शोध शुरू करेंगे। इसके लिए वे इस बीमारी की प्रतिरोधी प्रयत्न व अनुसंधानों का अभ्यास करेंगे। उन्होंने बताया कि आसपास यह बीमारी के लिए संघर्ष खतरा बनता जा रहा है। इस अवसर पर डॉ. एच.के. पाटुजा व श्रीकांत एचएयू प्रो. संदीप आर्य ने भी डॉ. मंजीत को उनके उत्कृष्ट परिष्कार की कामना की।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठकपक्ष न्यूज	02.08.2023	--	--

हकृषि के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय द्वारा गांव नंगथला में पौधरोपण कार्यक्रम आयोजित



पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 2 अगस्त : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग द्वारा गांव नंगथला में पौधरोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्यातिथि मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार रहे। यह पौधरोपण कार्यक्रम उन्नत भारत अभियान व आदर्श ग्राम योजना के तहत आयोजित किया गया था। मुख्यातिथि डॉ. नीरज कुमार ने कहा कि पेड़ों का हमारे जीवन में बहुत महत्व है क्योंकि ये कार्बनडाईऑक्साइड अवशोषित कर जीवनदायनी ऑक्सीजन छोड़ते हैं। साथ ही मौसम परिवर्तन जैसे ओंधी, तूफान, वर्षा सहित अन्य प्राकृतिक आपदाओं से होने वाले नुकसान से भी बचाते हैं। पेड़ मिट्टी का कटाव रोकने और मृदा शक्ति को बढ़ाने में भी अहम भूमिका अदा करते हैं। इसलिए पेड़ प्रकृति का अनमोल

उपहार है। मुख्यातिथि ने उपस्थित अधिकारियों, कर्मचारियों व विद्यार्थियों से आह्वान किया कि उन्हें पर्यावरण संरक्षण के लिए अधिक से अधिक पेड़ लगाने चाहिए। समाजशास्त्र विभाग की अध्यक्ष डॉ. विनोद कुमारी ने भी पेड़ों की महता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि पेड़ों के बिना जीवन संभव नहीं है क्योंकि ये मानव जीवन व पर्यावरण संरक्षण में अहम भूमिका निभाते हैं। इसलिए हमें आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ वातावरण देने के लिए अधिक से अधिक पेड़ लगाने चाहिए। कार्यक्रम के दौरान चम्पा, गुड़हल, बेलपत्र व नीम सहित अन्य पौधे लगाए गए। इस अवसर पर गांव नंगथला की सरपंच मोनिका, जगदीश सहित अन्य ग्रामीणों ने भी पौधरोपण कार्यक्रम में बढ़-चढ़कर भाग लिया। इसके अलावा विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग से डॉ. जतेश काठपालिया, डॉ. रश्मि त्यागी, डॉ. बस कौर सहित अन्य शिक्षाविद् व कर्मचारी भी मौजूद रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नभ छोर	02.08.2023	--	--

रिसर्च स्कॉलर डॉ. मंजीत 70 लाख सालाना की फैलोशिप के साथ अमेरिका में करेंगे शोध

नभ-छोर न्यूज ११ 02 अगस्त
हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के रिसर्च स्कॉलर डॉ. मंजीत ने दुनिया भर में ब्रेसिका तिलहन के लिए बड़ा खतरा कहे जाने वाली स्कलेरोटिनिया तना सड़न नामक बीमारी के निवारण के लिए अत्याधिक प्रतिरोधी जीनोटाइप चिन्हित किया है। यह खोज डॉ. मंजीत ने ब्रेसिका तिलहन की फसल से संबंधित जंगली किस्मों से निकाली है, जिससे स्कलेरोटिनिया तना सड़न बीमारी से लड़ने के लिए अन्य प्रतिरोधी किस्मों को विकसित कर इससे निजात पा सकेगी। डॉ. मंजीत की इस बेहतरीन उपलब्धि के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका ने कृषि विभाग में कृषि अनुसंधान सेवाओं के साथ पोस्ट-डॉक्टरल वैज्ञानिक के रूप में चयन किया है, जिन्हें 70 लाख रुपये



सालाना की फैलोशिप प्रदान की जाएगी। डॉ. मंजीत ने पीएचडी के उपरान्त यह कार्य भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् की परिभोजना के तहत जारी रखा। इसके अलावा उन्होंने इस शोध का श्रेय हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में शिक्षा की उपलब्ध सुविधाओं और शिक्षकों की

ओर से मिले मार्गदर्शन को दिया है। स्कलेरोटिनिया तना सड़न बीमारी ब्रेसिका तिलहन के लिए बड़ा खतरा माना गया है, जिससे दुनिया भर में काफी अधिक नुकसान हो रहा है। भारत में वैज्ञानिकों ने इस बीमारी के कारण उपज में अधिकतम 90 प्रतिशत हानि होने की संभावना जताई

है। अभी तक इस विशेष बीमारी से लड़ने के लिए प्रभावशाली प्रतिरोधी किस्मों की कमी है, जहाँ आगे चलकर स्कलेरोटिनिया तना सड़न बीमारी ब्रेसिका तिलहन के लिए विनाशकारी बीमारी साबित हो सकती है। प्रतिरोधी किस्म जीनोटाइप य स्टैम-फिजिकल-स्ट्रेथ-मीडियेटेड-रेजिस्टेंस की मदद से इस बीमारी से छुटकारा पाया जा सकता है।

रिसर्च स्कॉलर डॉ. मंजीत ने बताया कि अब वह अमेरिका में शीतकालीन गेहूँ की अत्याधिक नुकसानदेय तना सड़ा मक्खी कीट की प्रतिरोधी किस्म को विकसित करने पर शोध शुरू करेंगे। इसके लिए वे इस कीट की प्रतिरोधी प्रजनन व अनुवांशिकी का अध्ययन करेंगे। उन्होंने बताया कि खासकर वह कीट उत्तरी अमेरिकी मैदानों के गेहूँ के

लिए गंभीर खतरा बनता जा रहा है। इस उपलब्धि पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने डॉ. मंजीत सहित विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की टीम को बधाई दी। डॉ. मंजीत ने इस उपलब्धि का श्रेय विश्वविद्यालय के सरसौ प्रजनन के विशेषज्ञ वैज्ञानिक डॉ. राम अक्षतार को दिया है। उन्होंने बताया कि पूरा बचाव जैसी उन्नत तकनीकों का उपयोग करते हुए सफलतापूर्वक कई इंटरजेनेरिक क्रॉस विकसित किए गए, जिसके परिणामस्वरूप संतानों ने स्कलेरोटिनिया स्टैम रोट के खिलाफ प्रतिरोध प्रदर्शित किया, जिसके बाद ब्रेसिकेसी में अत्याधिक प्रतिरोधी जीनोटाइप की पहचान हो पाई। इससे स्कलेरोटिनिया तना सड़न बीमारी के खिलाफ कई नए प्रतिरोध तंत्रों का पता चला।